International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 4.935
Vol.6 No.2 Nov–Dec 2018

21 वीं सदी के हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित 'किन्नर' विमर्श

प्रा. व्हि. पी. नंदगिरीकर
हिंदी विभागाध्यक्ष,
बॅ. खर्डेकर महाविद्यालय, वेंगुर्ला (महाराष्ट्र)

इक्कीसवीं शताब्दी के कारण ही साहित्य में अनेक विमर्शों की चर्चा हो ने लगी हैं। इक्कीसवीं शताब्दी ने वैश्विक विमर्श में महाआख्यानों के अंत की घोषणा की गई हजारों वर्षों से साहित्य के केंद्र की महानताएँ अपनी आभा खोने लगी। उनकी जगह लघुताओं की प्रतिष्ठा होने लगी। साहित्यकार अजा दिव्यांग विमर्श, बाल विमर्श, मुस्लिम स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, अल्पसंख्यांक विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श आदि ऐसे अनेक विमर्शों की चर्चा कर रहे हैं। 21 वीं सदी के कहानी साहित्य में किन्नर विमर्श विभिन्न विमर्शों में एक नए अध्याय जोड़ता जा रहा है। भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री और पुरूष इन दो लिंगों को ही महत्त्वपूर्ण माना गया जिससे किन्नर या तृतीयपंथी का जीवन हमेशा हशिए पर रहा। स्त्री और पुरूष को छोड़कर एक तिसरा लिंग है उसे तृतीय पंथी या फिर अंग्रेजी में 'थर्ड जेंडर' कहते हैं। किन्नरों के लिए तृतीय लिंगी, उभय लिंगी, छक्का, बिचका, हिजड़ा, नाच्या, मावशी, दरमियान, शिखंडी जैसे कई नाम दिए गए हैं। किन्नरों को भारत में तृतीय समाज माना जाता है।

इक्कीसवीं शताब्दी के संदर्भ में डॉ. रजना राज़दान कहती है कि – ''हादसों भरे हालात ही जैसे इक्कीसवी सदी की पहचान हो गई है। आम आदमी पुलिस, पुलिस के डंडों की वजह से होती टूट–फूट और लहुलुहान होती भीड भाड को देखता है, और भगदड़ मच जानेपर बेतरतीब गिरते–पडते, दौडते–भागते,चिल्लाते हुए लोगों की सुनता है, आत्मीयजन के छूट गए हाथों के साथ ही चहल–पहल भी जगह की रौनक को एकदम खिन्न अवसाद में डूबे जाते देखता है।''[01] इक्कीसवीं शताब्दी के कारण परिवेश मे बदलाव आने लगा है, जिस के कारण अनेक समुदायों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित होने लगा है। अब किन्नरों को सार्वजनिक जीवन में भी अपनाया जा रहा है। लोगों ने भोपाल और गोरखपूर जैसे महानगरों की पालिकाओं में **शबनम मौसी, कमल जान** या अन्य किसी किन्नर को अपना किमती वोट देकर चूना। राजनीतिक क्षेत्र में इन धमाकों का असर हुआ ही, इन किन्नरों ने अपनी प्रशासनिक क्षमता, प्रतिभा और संवेदना से लोगें के दिलों को प्रभावित किया। वे किन्नर अपने समाज को रहस्यात्मक से निकालकर मुख्यधारा में प्रविष्ट हुए। लोगों ने उनका नया रूप देखा। उनके समाज की बदहाली की ओर भी लोगों का

ध्यान गया बाद में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने उन्हें 'अन्य पिछडावर्ग' श्रेणी में आरक्षित तमाम सुविधाएँ दिलाने में मदद की।

हिजडा या किन्नर से तात्पर्य :

हिजडा **उर्दू** शब्द है जो अरबी का हिज्र शब्द से लिया गया है। जिसका आशय अपने कबीले को छोडना है। अर्थात घर–परिवार एवं समाज से अलग होना। उर्दू अथवा हिन्दी में प्रयुक्त हिजडा शब्द को अन्य शब्दों जैसे–हिजिरा, हिजदा, हिजादा, हिजारा और हिजराह शब्द से भी संबोधित किया जाता है। उर्दू का ख्वाजा सरा शब्द हिजडा का समानार्थी है। दूसरे अन्य शब्द खसुआ ओर खुसरा है। **अंग्रेजी** में इसे 'यनक' अथवा 'हर्मा फ्रोडाइट' से जोडा जाता है। **बंगाली** में इन्हें हिजरा, हिजला, हिजरी से संबोधित किया जाता है। **तेलगु** में उन्हें नपुंसुकुडू, कोज्जा अथवा मादा, **तमिल** में अली, अरावनी, अरवन्नी, अरूवनी। **पंजाबी** में खुसरा, जंखा, **सिंधी** में खदरा, **गुजराती** में पवैया, **मराठी** में हिजडा, छक्का आदि नामों से जाना जाता है।

भारत में किन्नरों के चार वर्ग :

भारतीय समाज व्यवस्था में पुराण काल से लेकर वर्तमान समय तक किन्नरों का अस्तित्व रहा है। हर काल में उन्हें लेकर अनेक तर्क–वितर्क दिए गए हैं। वस्तुतः महिलाओं की तरह वेशभूषा और साज शृंगार करके समाज को रिझाने और अपनी आजीविका चालने वाले इस वर्ग को चार वर्गों में विभाजीत किया जाता है। वह इसप्रकार है– 1. **बूचरा** जो जन्मजात किन्नर होते हैं 2. **नीलिमा** जो कोटों पर किसी कारणवश स्वयं को किन्नर के निकट समजते है। 3. **मनसा** जो अपनी इच्छा से किन्नर बनते हैं। 4. **हंसा** प्रकार के किन्नर किसी यौन अक्षमता के कारण स्वयं को हिजड़ों के साथ जोड़ लेते हैं। वास्तव में ये नकली किन्नर होते हैं। जो धन के लोभ में किन्नर का नाटक करके लोगों से पैसे वसूलते है। 5. **छिबरा** जो जबरदस्ती से किन्नर बनाए जाते है।

21 वीं सदी के हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित 'किन्नर' विमर्श :

21 वीं सदी के हिंदी कहानी साहित्य में कुछ चुनिंदा कहानियों में किन्नरों के जीवन को कथ्य बनाया गया है। यहां पर उनमें से कुछ चुनिंदा कहानियों पर प्रकाश डाला गया है। **कहानीकार अंजना वर्मा की कहानी 'कौन तार से बीनी चदरिया'** हमें मानवीय संबंध के अटूट रिश्ते–नातों का एहसास कराती हैं । कहानी में दो थर्ड जेन्डर है सुन्दरी और कुसुम। यह दोनों भी थर्ड जेन्डर होने के कारण अपने परिवार से तूटकर अलग हो जाते हैं, वास्तविक रूप में सुन्दरी नाम के अनुसार बहुत सुंदर है। सुंदरी का जन्म एक संपन्न परिवार में होता है। मॉ को वही तकलीफ सहनी पडी है जो अन्य बच्चों को जन्म देते

समय सहनी पडी है। इसी कारण सुंदरी के प्रति मॉ का उतना ही आकर्षण है जितना की अन्य बच्चों के प्रति रहा हैं इस बिछडन को सुंदरी की मॉ हर दम याद करती हैं। सुंदरी भी अपने मॉ से मिलने के लिए भरकस प्रयास करती है, परंतु ध्यान रखती है कि उसे कोई पहचाने नहीं। नही तो घरवालों की इज्जत समाज में उछाली जाएगी। सुंदरी अपनी सहेली कुसुम के साथ अपनी बहन (रेणू) और मॉ को एक ऐसी जगह मिलती है जो की बिहाबान है। उस समय सहज मानविय संवेदनाओं का हमें परिचय हो जाता हैं। मॉ की पीडा, बैचेनी, विवह्लना, वेदना का एहसास होने लगता हैं। कहानीकार कहती है–''उसकी मॉ भी उठी। स्नेहखातर होकर अपने कमजोर हाथों से सुंदरी का गाल छुती हुई ठुट्टी पकडकर उसे कई पलों तक देखती रही।××× सुंदरी ने मॉ को पकड लिया और उसके गाल से अपना सटा लिया। ××× । सीने से चिपकी उसकी सुनी साडी का मुलायम एहसास वह अपने कलेजे में संजोती रही। अलग हुई तो देखा मॉ रो रही थी।''[2]

प्रसिध्द कहानीकार **महेन्द्र भीष्म** की कहानी **'त्रासदी'** सामाजिक हिजडे पन को उजागर करती हैं। पति के मृत्यु के बाद रतीपर समाज कंठको के द्वारा बलात्कार होते देख सुंदरी नाम हिजडा उसकी इज्जत बचाती है। परंतु इसी दौरान सुंदरी (हिजडा) घायल हो जाती है। उसका इलाज रती करती है। परंतु इस दुर्घटना के कारण सुंदरी का चेहरा फट जाता है, जिससे उसे भिक मॉगना पडता है। इस स्थिती को रती जान जाती है और उसको अपने पास रखती है। परंतु बेटे दीपक के कारण रती को सुंदरी से हाथ धोने पडते है। प्रस्तुत कहानी के द्वारा कहानीकार महेंद्र भीष्म ने सामाजिक हिजडे पन को उजागर किया हैं। अकेली महिला को हिंस्र पशु के समान नोचनेवाले मनुष्यों से हिजडा (सुंदरी) बचाती है,परंतु रती का बेटा स्वयं व्याभिचारी होकर अपनी मॉ पर लॉछन लगाता है। एक लडकी को गर्भवती बनाकर उससे शादी करने से मुकरना चाहता है। सामाजिक दबाब के कारण उसे शादी तो करनी पडती है। इस बात का घुस्सा वो सुंदरीपर निकालते हुए उसे रेल के निचे फेंक देता है–'' वर्षो की नफरत से भरे दीपक ने आव देखा न ताव, सुंदरी को गठरी–सा अठा लिया और प्लेटफार्म के नीचे फेंक दिया। तभी वहॉ धडधड करता हुआ मेमू ट्रेन का इंजन आ गया और सुंदरी की चीख घुटकर रह गयी।''[3] कहानीकार ने प्रश्न निर्माण किया है कि हिजडा कौन हैं? सुंदरी, दीपक या समाज के हिंस्र पशुवत व्यवहार करनेवाले मनुष्य !

'रतियावन की चेली'ललित शर्मा की आत्मकथात्मक शैली में लिखी हुई कहानी है। पार्वती नामक हिजडे के द्वारा सकारात्मक वृत्ति के दर्शन कराये गये है। अपका व्यवहार अगर अच्छा रहा तो निष्चित रूप से समाज की मानसिक अवस्था बदल जाती है। अपने सकारात्मक व्यवहार के कारण ही 'पार्वती' हिजडा होते हुए भी लोगों के मन में अपना स्थान बनाती है। कहानीकार पार्वती के बचपन के संदर्भ में कहते, कि उसका बचपन तो

बहुत खुशहाली के साथ बितता हैं, परंतु मॉ–बाप के पास से हिजडे उसे छिनकर चले जाते है, जिसके कारण उसे अनेक विपदाओं का सामना करना पडता है। अन्य हिजडो से मारपीट,हिंसा, परतांडना को पार्वती सहती है। बडी होनेपर पार्वती अपने गॉव लौटकर आ जाती है।घरवाले उसका स्वीकार करते है। समाज के द्वारा भी उसका स्वीकार इसलिए किया जाता है कि उसका व्यवहार अच्छा हैं। समाज भी जान जाता है कि वो भी इंसान की औलाद है कोई एक अंग न होने से किसी को सामाजिक बहिष्कार नहीं डाला जा सकता। कहानीकार ने परिर्वीत सोच को सामने लेकर आये है,–''हिजडा होने पर समाज का तिरस्कार झेलना पडता है तो वही समाज सम्मान भी करता है।''[4]

डॉ. लवलेश दत्त की **'नेग'** कहानी के द्वारा एक स्त्री का दूसरी स्त्री के प्रति होनेवाली ओछी मानसिकता के दर्शन होते हैं। एक नारी दूसरी नारी के प्रति हीनता की भावना रखती है, इससे तो अच्छे वो हिजडे है जो नवजात स्त्री भृण के प्रति आत्मीयता दिखाकर जन्म उत्सव मनाते है, और नेग के रूप में कुछ रासी देकर चले जाते हैं। लेखक ने समाज में पनप रही नारी विषय में स्त्री की हीनभावना का चित्रण किया है। सुधीर और सुमन को तीसरी बेटी ही हुई है, परंतु अपने को पोता चाहिए इस भाव के कारण सास रमादेवी उसका आनंद उत्सव मनाती नहीं। नाच गाना करने आए हिजडों को फटकारकर घर से बहार निकालना चाहती है रमादेवी। परंतु हिजडों को जब पता चलता है कि लडकी का जन्म होने के कारण उत्सव मनाया नहीं जा रहा है तो स्वयं नाच गाकर 2500 रू. रखते है– ''लो चाची––– हमारी तरफ से नेग–––तुम्हारे घर में लक्ष्मी आई है––– यह बताने में शर्म कैसी? अरे जब सरकार लडकी पैदा होने पर इतना कुछ कर रही है। अस्पतालों में लडकी होती है तो कोई खर्चा नहीं देना पडता वैसे ही हम हिजडों ने फैसला किया है कि उन घरों में अपने पास से नेग देंगे।''[5] कहानीकार ने प्रष्न निर्माण किया है कि कौन श्रेष्ठ है समाज के द्वारा दूर धकेलिए गये हिजडा समुदाय या अपने आल को सर्वश्रेष्ठ कहनेवाला मानव समुदाय जो एक बच्ची के जन्म के कारण हिजडेगत व्यवहार करता हैं।

कहानीकार संजय दुबे की 'पन्ना बा' कहानी के माध्यम से किन्नरों के जीवन पैहलुओं को सामने लेकर आये हैं। उनकी वेषभूषा, बरताव,रहना, खाना–पीना और मानवीय संवेदनाओं को चित्रित करने काम किया हैं। गोटी (लडकी) के द्वारा बचपन की यादों के साथ बडेपन को भी चित्रित किया गया हैं। कहानी में गोटी पन्ना बा के बारे में जानना चाहती है,परंतु उम्र कम होने के कारण उसे समझ में नहीं आता परंतु उम्र के साथ ही उसकी शादी हो जाने के बाद अपने गोद में संतान को लेकर आते समय 'पन्ना बा' उसे कुछ पैसे देता है तो अनास रूप से गोटी के मन में पन्ना बा के प्रति प्रेम का भाव निर्माण हो जाता है। पन्ना बा किन्नरों का जीवन व्यापन करते हुए भी मानवीय संबंधों को नहीं

भूलता। पन्ना बा कहानी में हिजडों के लाशों के साथ किये जानेवाले बर्ताव को उजागर किया है। परंपरा के अनुसार यह माना जाता है कि किसी हिजडे की मृत्यु हो जानेपर उसकी लाश को जुतों से पिटा जाता है क्योंकि अगले जनम् में वह हिजडा बनकर न पैदा हो, इस जनम् उसे अनेक मानसिक यातना, पीडा,दुख, अपमान, एकाकीपन, जीवन बीताना पडा है, जननंग न होने के कारण उसे यह सब सहना पडा है –''मैं भी चाहती थी कि उसकी लाश पर जुते बरसा कर मैं भी उसे इस किन्नर के जन्म पर धिक्कारूँ और शायद वह मेरे जूतों की बौछार से डर कर अगले जनम् में किन्नर के रूप में पैदा होने की हिम्मत ना करें ।''[6]

21 वी शताब्दी यह वैज्ञान युग के नाम से भी जानी जाती है। मनुष्य ने अपनी बुध्दी के बलपर ऐसे कारनामें हासील किए है जो कभी सोचे भी नही गए थे। इसी बात को उजागर करनेवाली संकल्प यह कहानी है। आधुनिक चिकित्सा पध्दति के कारण यह पता चलता है कि बुचार हिजडों में पूर्ण स्त्रीत्व की संभावना हो सकती है। इसी का उदाहरण माधुरी के द्वारा देखा जा सकता है। बचपन से ही हिजडे का जीवन जो हि माधुरी डॉक्टरी जॉच पडताल के बाद पूर्ण रूप से स्त्री का जीवन यापन करने लगती है। प्लॉस्टीक सर्जरी के कारण यौवन अंगों में सुधार किया जा सकता है, जिससे वह स्त्री का जीवन यापन करती है। प्रारंभ में दैन्यपुर्ण जीवन यापन करनेवाली, परिवार के लिए त्यागपूर्ण जीवन अपनानेवाली, पिता एवं बहन का खयाल रखनेवाली, साहसी, हिम्मती खुद्दारी जीवन को अपनानेवाली माधुरी दिखाई देती है।–''गुरूभाई माधुरी के जज्बे और हिम्मत की तारीफ करते–करते निहाल हो उठी और दिल से सुखी जीवन जीने का आशीष दिया। घर आने पर पिता को सारी बात बताई दोनों लिपट कर रोने लगे, हिजडा शब्द उसकी जिंदगी को अभिशप्त बनाने के लिए अब उसके साथ नहीं था।''[7]

निष्कर्ष :

अतः कहा जा सकता है कि जीन लोगों के बारे मे कभी सोचा और समझा नहीं जाता था, कम से कम अब उन कि ओर मानवता की दृष्टी से देखा तो जा रहा है। एक समय ऐसा था की अछूतों की बसतियाँ तो गाँवो से बहार रहा करती थी, समाज में उनका अपना एक स्थान था। परंतु थर्ड जेन्डर तो समाज से पूर्णतः उपेक्षीत ही रहे है, मानवीय अवेहलाओ का सामना उन्हे करना पडा है। 21 वीं शताब्दी में भी विद्वान लोग खुल कर चर्चा करने में झीझक महसूस करते है। प्रकृतिक रूपसे अलिंगी होने के कारण समाज उनकी ओर हेय दृष्टी से देखने लगता है। जिस प्रकार से सामान्य व्यक्ति के अंतर्गत भाव–भावनाएँ होती है वही भाव–भावनाएँ उनमें भी होती है, वे भी मानवीय प्रेम, दया, सहानुभूति, मान–सम्मान, अपमान, सामाजिकता के साथ रहना चाहते है। परंतु समाज के

द्वारा उनकी उपेक्षा ही की जाती है। कहानी का बिंदा महाराज मानवीय भावनाओ से परिपूर्ण होने के बावजूद भी सामाजिक उपेक्षा झेलता है। वर्तमान परिस्थितियों में हिजडा (एक गाली) कौन है? हिजडा कहानी के द्वारा लेखक ने बतलाया है कि अपने कर्तव्य से जो मुखर जाता है, उचि एवं अनुचित का फर्क जानता नहीं है वही वास्तव मे हिजडा है। हिन्दी कहानियों के माध्यम से थडे जेन्डर के कई सारे पहलूओं को उजागर करने का काम हुआ है।

संदर्भ सूची :

1) सच से टकराता यथार्थ और इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता – डॉ रजना राजदान
2) वाङमय :जनवरी–मार्च 2017 सं.एम. फिरोज अहमद पृष्ठ –106
3) वाङमय :जनवरी–मार्च 2017 सं.एम. फिरोज अहमद पृष्ठ –110
4) वाङमय :जनवरी–मार्च 2017 सं.एम. फिरोज अहमद पृष्ठ –112
5) वाङमय :जनवरी–मार्च 2017 सं.एम. फिरोज अहमद पृष्ठ –117
6) वाङमय :जनवरी–मार्च 2017 सं.एम. फिरोज अहमद पृष्ठ –121
7) वाङमय :जनवरी–मार्च 2017 सं.एम. फिरोज अहमद पृष्ठ –133
8) इक्कीसवीं सदी का दलित साहित्य – डॉ. भरत सगरे
9) मेरी कथा : दलित यातना , संघर्ष और भविष्य – मार्टिन मेकवान